टिप्पणी

242hi07

7

संगीत रत्नाकर का संक्षिप्त परिचय

पं. शाङ्र्गदेव द्वारा रचित ग्रन्थ 'संगीत रत्नाकर' भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक ऐसा ग्रन्थ है जिसे हिन्दुस्तानी संगीत तथा कर्नाटक संगीत, दोनों पद्धतियों में आधार ग्रन्थ के रूप में स्वीकार किया गया है। इस ग्रन्थ के माध्यम से न केवल भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्राचीन विधाओं, स्वरों, रागों, गीति, जातिगायन, ताल, वाद्य व नृत्य आदि से सम्बन्धित जानकारी आधुनिक संगीत विद्वानों को उपलब्ध हो सकी है। संगीत रत्नाकर में पं. शाङ्र्गदेव के पूर्व ग्रन्थकारों में भरत, मतंग, दत्तिल आदि ग्रन्थकारों के मतों के उल्लेख होने से यह ग्रन्थ भारतीय संगीत का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ सिद्ध होता है।

तेरहवीं शताब्दी में लिखे गये ग्रन्थ संगीत रत्नाकार को 'सप्ताध्यायी' भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें सात अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में संगीत के विविध पहलू विस्तारपूर्वक बताये गये हैं। उदाहरण स्वरूप, 'रागविवेकाध्याय' नामक द्वितीय अध्याय में वे रागों के दशविध वर्गीकरण का विवरण देते हैं तथा कुल 264 रागों का विवरण 'पूर्व प्रसिद्ध' व 'अधुना प्रसिद्ध' कहकर रचनाओं एवं विस्तार के साथ दिया है।

पं. शाङ्र्गदेव ने संगीत के सिद्धांतों को पुन: स्थापित किया एवं उन्हें व्यापक रूप से सामने रखा। आज भी मूल शब्दावली की परिभाषाओं को इस ग्रन्थ में से उद्धृत किया जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप–

- संगीत रत्नाकर के मुख्य बिन्दुओं को प्रस्तुत कर सकेंगे;
- संगीत रत्नाकर के मुख्य बिंदुओं का वर्णन कर सकेंगे;
- सात अध्यायों के नामों का उल्लेख कर सकेंगे;

टिप्पणी

7.1 अध्यायों का परिचय

पं. शार्ङ्गदेव ने संगीत रत्नाकर की रचना तेरहवीं शताब्दी में की। इस संस्कृत ग्रन्थ में सात अध्याय है। अत: इसे कदाचित् 'सप्ताध्यायी' नाम से भी जाना जाता है। सात अध्याय इस प्रकार हैं:

1. स्वरगताध्याय
2. रागविवेकाध्याय
3. प्रकीर्णकाध्याय
4. प्रबन्धाध्याय
5. तालाध्याय
6. वाद्याध्याय
7. नर्तनाध्याय

पाठगत प्रश्न 7.1

1. संगीत रत्नाकर किस शताब्दी में लिखा गया?
2. संगीत रत्नाकर के रचयिता कौन हैं?
3. संगीत रत्नाकर के अध्यायों के नाम क्या हैं?
4. 'सप्ताध्यायी' किसे कहते हैं?

7.2 स्वरगताध्याय का विवरण

स्वरगताध्याय नामक प्रथम अध्याय में आठ प्रकरण हैं। प्रथम प्रकरण में ईश्वर की वन्दना के उपरान्त लेखक ने अपने पिता का नाम 'सोढल' बताया है जो कश्मीर के यशस्वी ब्राह्मण वंश से सम्बन्ध रखते थे। इस ग्रन्थ में उन्होंने भरत, मतंग तथा दत्तिल के अतिरिक्त याष्टिक, दुर्गाशक्ति, शार्दूल, कोहल, नारद व नान्यदेव आदि जैसे महान पूर्व ग्रन्थकारों के विचारों को सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया है। गीत, वाद्य व नृत्य के सम्यक् स्वरूप को 'संगीत' की संज्ञा देने के साथ ही उन्होंने संगीत के दो प्रकार मार्ग व देशी बताए हैं। उनके अनुसार, जिस संगीत की खोज ब्रह्मा आदि देवों ने की और जिसका प्रयोग भरत आदि मुनियों ने किया उसे 'मार्ग' कहते हैं और विभिन्न देशों में जनरूचि के अनुसार प्रयुक्त होने वाले संगीत को 'देशी संगीत' कहते हैं, ऐसा माना है। इन्होंने नृत्य को वाद्य का और वाद्य को गीत का अनुगामी मानते हुए गीत, वाद्य व नृत्य में से गीत अर्थात् गायन को प्रधान माना है। वे सात अध्यायों एवं उनकी विषय वस्तु का संक्षिप्त परिचय देते हैं।

प्रथम अध्याय के द्वितीय व तृतीय प्रकरण में शरीर संरचना, नाद की सर्वव्यापकता, नाद, श्रुति, स्वरों के प्रकार, उनके वर्ण, देवता, ऋषि, छंद व रस आदि का विवेचन किया गया है। नादोत्पत्ति की चर्चा में उन्होंने शरीर में प्राणवायु के उत्थान व मुख से ध्वनित होने की प्रक्रिया का उल्लेख करते हुए 22 श्रुतियाँ मानी हैं। इन 22 श्रुतियों से उन्होंने

टिप्पणी

12 विकृत व 7 शुद्ध स्वरों की उत्पत्ति मान कर स्वरों की कुल संख्या 19 मानी है और स्वरों का सम्बन्ध विभिन्न रसों, छन्दों व रंगों से बताया है। चतुर्थ व पंचम प्रकरणों में ग्राम, मूर्च्छना व तान आदि की व्याख्या करते हुए लेखक ने दो ग्राम–षड्जग्राम व मध्यमग्राम तथा उनसे उत्पन्न मूर्च्छनाओं व तानों का विस्तृत वर्णन किया है। तत्पश्चात् स्वरसाधारण के अन्तर्गत जातियों में इन स्वरों के प्रयोग की चर्चा की है। छठे, सातवें व आठवें प्रकरणों में वर्ण, अलंकार, जातिलक्षण व गीति आदि को परिभाषित किया है।

पाठगत प्रश्न 7.2

1. प्रथम अध्याय में कितने प्रकरण हैं?
2. पं. शार्ङ्गदेव के पिता एवं वंश का परिचय दीजिए।
3. मार्ग व देशी संगीत की परिभाषा क्या है?
4. पं. शार्ङ्गदेव ने कितनी श्रुतियां व स्वर माने हैं?
5. प्रथम अध्याय के द्वितीय व तृतीय प्रकरण में किन सांगीतिक विषयों पर चर्चा की गई है?

7.3 रागविवेकाध्याय का विवरण

'रागविवेकाध्याय' नामक द्वितीय अध्याय के अंतर्गत 'मार्ग' राग–ग्राम राग, उपराग, राग, भाषा, विभाषा, अंतर्भाषा तथा 'देशी' राग–भाषांग, उपांग, क्रियांग और रागांग के रूप में रागों का दशविध वर्गीकरण दिया गया है। संगीत रत्नाकर में प्रत्येक वर्ग के आधार पर रागों की कुल संख्या 264 है।

इस अध्याय में दो प्रकरण हैं। प्रथम प्रकरण के अंतर्गत पाँच गीतियों – शुद्धा, भिन्ना, गौड़ी, वेसरा व साधारणी के आधार पर पाँच प्रकार के ग्राम राग बताये हैं। तत्पश्चात् उपराग, राग, भाषा, विभाषा एवं अंतर्भाषा का उल्लेख है। द्वितीय प्रकरण में रागालाप एवं आक्षिप्तिका के साथ–साथ पूर्वप्रसिद्ध व अधुनाप्रसिद्ध (उस काल में प्रचलित) देशी रागों का वर्णन है।

पाठगत प्रश्न 7.3

1. द्वितीय अध्याय में कितने प्रकरण है?
2. पांच गीतियों के नाम क्या हैं?
3. लेखक ने कुल कितने रागों की चर्चा की है?
4. संगीत रत्नाकर के अनुसार रागों का दशविध वर्गीकरण किस रूप में दिया गया हैं?

टिप्पणी

7.4 प्रकीर्णकाध्याय का विवरण

तृतीय अध्याय 'प्रकीर्णकाध्याय' है, जिसमें 'प्रकीर्ण' अर्थात् विविध विषय निहित हैं। इसका आरम्भ निपुण रचयिता 'वाग्गेयकार' के वर्णन से होता है। वह जो रचना के साहित्यिक पक्ष के साथ-साथ सांगीतिक रूप का भी रचयिता को, 'वाग्गेयकार' कहलाता है। वाग्गेयकार लक्षणों के अंतर्गत व्याकरण का ज्ञान, सामान्य भाषा ज्ञान, रस, भाग, कला, लय, ताल, देशी राग, प्रंबन्ध इत्यादि का ज्ञान सम्मिलित हैं। रचयिता के स्तर के अनुसार उत्तम, मध्यम एवं अधम श्रेणियां भी दी गई हैं। तत्पश्चात् गंधर्व एवं स्वरादि का वर्णन है। वह जिसे मार्ग एवं देशी संगीत का ज्ञान हो, 'गंधर्व' है तथा वह जिसे केवल मार्ग का ज्ञान हो, 'स्वरादि' है।

विभिन्न श्रेणियों के आधार पर गायक के लक्षण दिए गए हैं। उदाहरण के रूप में, उत्तम गायक की आवाज का गुण धर्म अच्छा होना चाहिए, उसे रागों, रागांगों भाषाओं, क्रियांगो और उपांगो से भली प्रकार परिचित होना चाहिए, प्रबंधों, आलप्ति का ज्ञान होना चाहिए, सभी स्थानों में गमक का अभ्यास, ताल, लय इत्यादि का ज्ञान होना चाहिए। इसी प्रकार मध्यम, अधम, पंचविध गायक, त्रिविध गायक तथा गायन्ति (गायिका) का भी वर्णन है।

इस अध्याय में पं. शाङ्र्गदेव के द्वारा पंद्रह प्रकार के गमक तथा छियानवे स्थाय बताए गए हैं। आवाज़ का इस प्रकार हिलाना जिससे चित्त प्रसन्न हो, 'गमक' कहलाता है तथा 'स्थाय' राग के अवयव हैं। राग को अनावृत्त करने की प्रक्रिया 'आलप्ति' कहलाती है। वे आलप्ति के दो प्रकार बताते हैं–

(1) रागालप्ति तथा (2) रूपक आलप्ति

अन्त में, वे वृन्द गान एवं वादन का उल्लेख करते हैं।

पाठगत प्रश्न 7.4

1. 'वाग्गेयकार' किसे कहते हैं?
2. उत्तम गायक के क्या लक्षण हैं?
3. संगीत रत्नाकार में कितने प्रकार के गमक बताए गए हैं?

7.5 प्रबन्धाध्या का विवरण

चतुर्थ अध्याय अर्थात् प्रबन्धाध्याय में 'प्रबन्ध' गेय विधा का वर्णन किया गया है। प्रबन्ध प्राचीन काल की एक प्रचलित गेय विधा थी जिसमें चार धातु - उद्ग्राह,

टिप्पणी

मेलापक, ध्रुव, आभोग एवं छः अंग-स्वर, बिरुद, तेनक, पद, पाट तथा ताल का समावेश था। प्रबन्ध के तीन प्रकार - सूड, आलि अथवा आलिक्रम एवं विप्रकीर्ण बताये गए हैं।

पं. शाङ्र्गदेव गीत की परिभाषा एवं उसके दो प्रकार - गंधर्व एवं गान से आरम्भ करते हैं। गान के दो प्रकार हैं- निबद्ध तथा अनिबद्ध। वह जो धातुओं और अंगों से बद्ध हो, 'निबद्ध' है तथा वह जो इस प्रकार के बन्धन से मुक्त हो, 'अनिबद्ध' है। निबद्ध के लिए वे तीन संज्ञाएं बताते हैं- प्रबन्ध, वस्तु तथा रूपक।

पाठगत प्रश्न 7.5

1. 'प्रबन्ध' किसे कहते हैं?
2. 'प्रबन्ध' के धातु और अंग वर्णित करें।
3. 'प्रबन्ध' के तीन प्रकारों के नाम बताइए।

7.6 तालाध्याय का विवरण

पाँचवा अध्याय अर्थात् तालाध्याय 'ताल' की अवधारणा पर केन्द्रित है। पं. शाङ्र्गदेव के अनुसार, ताल वह आधार है जिस पर गायन, वादन तथा नृत्य प्रस्थापित हैं। इस अध्याय के दो भाग हैं। प्रथम भाग के अंतर्गत मार्ग ताल तथा द्वितीय भाग के अंतर्गत देशी ताल बताये गए हैं। मार्ग तालों के पाँच प्रकार तथा देशी तालों के एक सौ बीस प्रकार दिए गए हैं।

ताल के विभिन्न अवयव, जैसे क्रिया (निःशब्द एवं सशब्द), लय, यति, कला इत्यादि का वर्णन उनके सांगीतिक काल अथवा गति के क्रियात्मक प्रस्तुतिकरण के आधार पर किया गया है।

पाठगत प्रश्न 7.6

1. पं. शाङ्र्गदेव के अनुसार ताल की परिभाषा क्या है?
2. तालाध्याय में कितने भाग हैं?
3. तालाध्याय में मार्ग तालों के कितने प्रकार दिए गए हैं?
4. तालाध्याय में देशी तालों के कितने प्रकार दिए गए हैं?

टिप्पणी

7.7 वाद्याध्याय का विवरण

'वाद्याध्याय' नामक छठे अध्याय के अंतर्गत चार प्रकार के वाद्य दिए गए हैं, यथा- (1) तत, (2) अवनद्ध (3) धन (4) सुषिर।

तत वाद्यों के अंतर्गत एक तंत्री, त्रितंत्री, चित्र वीणा, विपंची वीणा, किन्नरी वीणा, पिनाकी वीणा इत्यादि जैसे तंत्री वाद्य सम्मिलित हैं। चमड़े से आच्छादित ताल वाद्य अवनद्ध कहलाते हैं। उदाहरण के रूप में पटह, घट, डक्क, डमरू, मेरी तथा दुंदुभि। धातु से निर्मित ताल वाद्य धन वाद्य कहलाते हैं। इस श्रेणी के अंतर्गत जय घंटा, घंटा, क्षुद्र घंटिका इत्यादि जैसे वाद्य सम्मिलित हैं। वस्तुतः छिद्र युक्त वायु की सहायता से बजने वाले वाद्य सुषिर वाद्य कहलाते हैं, जैसे वंशी, पाविका, मुरली, श्रृंग, शंख इत्यादि।

इस अध्याय में इन वाद्यों का वादन शैली सहित वर्णन है।

पाठगत प्रश्न 7.7

1. संगीत रत्नाकर में कितने प्रकार के वाद्य दिए गए हैं? उनके नाम बताइए।
2. तत वाद्यों के दो उदाहरण दीजिए।
3. अवनद्ध और धन वाद्य क्या होते हैं?
4. सुषिर वाद्यों के दो उदाहरण दीजिए।

7.8 नर्तनाध्याय का विवरण

'नर्तनाध्याय' नामक सातवां अध्याय नर्तन से संबंधित अवयवों, उप अवयवों तथा शारीरिक भंगिमाओं का वर्णन है। इसके दो भाग हैं। प्रथम भाग में पं. शाङ्र्गदेव ने नर्तन के संदर्भ में तीन संज्ञायें दी हैं– नाट्य, नृत्य तथा नृत्त। नाट्य एवं नृत्य का प्रयोग पर्व के समय तथा नृत्त का प्रयोग राजाओं के अभिषेक के समय, विवाह, पुत्र जन्म इत्यादि उत्सवों के समय बताया गया है। नाट्य वाचिक अभिनय, नृत्य आंगिक अभिनय तथा नृत्त लय-ताल के अनुसार आंगिक क्रिया एवं पाद संचालन के द्वारा भावाभिव्यक्ति पर आधारित है। संगीत के संदर्भ में 'नृत्य' का प्रयोग है। नृत्य एवं नृत्त के दो प्रकार वर्णित हैं, यथा-ताण्डव एवं लास्य। ताण्डव उद्धत प्रकार एवं लास्य सुकुमार प्रकार माना जाता है, जिन्हें क्रमशः शिव एवं पार्वती ने उत्पन्न किया है। द्वितीय भाग के अंतर्गत नव रस-श्रृंगार, हास्य, अखुत, रौद्र, वीर, करुण, भयानक, बीभत्स तथा शांत का वर्णन दर्शकों के संदर्भ में किया गया है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 7.8

1. नर्तन के संदर्भ में संगीत रत्नाकर में दी गई तीन संज्ञाओं का नाम बताइये।
2. ताण्डव और लास्य क्या हैं?
3. नव रसों के नाम बताइये।

आपने क्या सीखा

पं. शार्ङ्गदेव रचित 'संगीत रत्नाकर' संस्कृत भाषा में संगीत का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। इसे संगीत की दोनों पद्धतियों, हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत की पारिभाषिक शब्दावली का मूल माना जाता है। भारतीय संगीत के इस ग्रंथ के माध्यम से प्राचीन समय में प्रचलित शास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं, रागों, गीतियों, जाति गान, ताल प्रस्तुतिकरण, वाद्य तथा नर्तन के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। संगीत रत्नाकर में पं. शार्ङ्गदेव ने विभिन्न अवधारणाओं को व्यवस्थित प्रकार से परिभाषित किया है तथा अपने से पूर्व संगीत विद्वानों के विचार भी प्रस्तुत किये हैं। उन्होंने अपने समय के एवं अपने से पूर्व समय के रागों तथा तालों का वर्णन किया है। इस ग्रंथ को 'सप्ताध्यायी' भी कहा जाता है, क्योंकि यह सात अध्यायों में विभाजित हैं।

पाठांत प्रश्न

1. संगीत रत्नाकर महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ क्यों माना गया है?
2. संगीत रत्नाकर को अन्य किस नाम से पुकारा जाता है और क्यों?
3. पं. शाङ्र्गदेव ने किन पूर्व ग्रंथकारों के मतों को अपने विवेचन का आधार बनाया?
4. मार्ग व देशी तथा पूर्व प्रसिद्ध व अधुना प्रसिद्ध शब्दों का संगीत रत्नाकर में क्या तात्पर्य है?
5. संगीत रत्नाकर में प्रमुख रूप से किन सांगीतिक पारिभाषिक शब्दों (Terms) को संगीत विवेचन का आधार बनाया गया है?

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1

1. तेरहवीं शताब्दी
2. पं. शार्ङ्गदेव
3. स्वरगताध्याय, रागविवेकाध्याय, प्रकीर्णकाध्याय, प्रबन्धाध्याय, तालाध्याय, वाद्याध्याय, नर्तनाध्याय
4. संगीत रत्नाकर

7.2

1. आठ
2. पिता का नाम सोढल, कश्मीर देश के ब्राह्मण वंश से सम्बन्धित
3. जिस संगीत की खोज ब्रह्मा आदि देवों ने की और जिसका प्रयोग भरत आदि मुनियों ने किया उसे मार्ग संगीत कहते हैं। विभिन्न देशों में जनरूचि के अनुसार प्रयुक्त होने वाले संगीत को देशी संगीत कहा गया है।
4. पं. शार्ङ्गदेव ने 22 श्रुतियां व शुद्ध तथा विकृत मिलाकर कुल 19 स्वर माने हैं।
5. शरीर संरचना, नाद की सर्वव्यापकता, नाद, श्रुति स्वरों के प्रकार, उनके वर्ण इत्यादि।

7.3

1. द्वितीय अध्याय में दो प्रकरण हैं
2. शुद्धा, भिन्ना, गौड़ी, वेसरा, साधारणी
3. 264 रागों की चर्चा की है
4. 'मार्ग' राग – ग्राम राग, उप राग, राग, भाषा, विभाषा, अंतर्भाषा तथा 'देशी' राग – भाषांग, उपांग, क्रियांग और रागांग के रूप में रागों का दशविध वर्गीकरण दिया गया है।

7.4

1. वह जो रचना के साहित्यिक पक्ष के साथ-साथ सांगीतिक रूप का भी रचयिता हो, 'वाग्गेयकार' कहलाता है।

टिप्पणी

2. उत्तम गायक की आवाज़ का गुण धर्म अच्छा होना चाहिए, उसे रागों, रागांगों, भाषांगो, क्रियांगों और उपांगों से भली प्रकार परिचित होना चाहिए, प्रबंधों आलप्ति का ज्ञान होना चाहिए, सभी स्थानों में गमक का अभ्यास, ताल लय इत्यादि का ज्ञान होना चाहिए।
3. पंद्रह

7.5

1. प्राचीन काल की एक प्रचलित गेय विधा
2. धातु – उद्ग्राह, मेलापक, ध्रुव, आभोग
   अंग – स्वर, बिरुद, तेनक, पद, पाट, ताल
3. सूड़, आलि अथवा विप्रकीर्ण

7.6

1. ताल वह आधार है जिस पर गायन, वादन और नृत्य स्थापित हैं
2. दो भाग
3. पांच
4. एक सौ बीस

7.7

1. संगीत रत्नाकर में वाद्यों के चार प्रकार दिए गए हैं – तत, अवनद्ध, धन, सुषिर
2. एक तंत्री, त्रि तंत्री
3. अवनद्ध – चर्म आच्छादित ताल वाद्य
   धन – धातु निर्मित ताल वाद्य
4. वंशी, पाविका

7.8

1. नाट्य, नृत्य तथा नृत्त
2. संगीत रत्नाकर में नृत्य एवं नृत्त के दो प्रकार वर्णित हैं, यथा – ताण्डव एवं लास्य। ताण्डव उद्धत प्रकार एवं लास्य सुकुमार प्रकार माना जाता है, जिन्हें क्रमशः शिव एवं पार्वती ने उत्पन्न किया है।
3. शृंगार, हास्य, अद्भुत, रौद्र, वीर, करुण, भयानक, विभत्स तथा शांत।

टिप्पणी

पारिभाषिक शब्दावली

1. हिन्दुस्तानी संगीत – उत्तर भारत में प्रचलित भारतीय शास्त्रीय संगीत
2. कर्नाटक संगीत – दक्षिण भारत में प्रचलित भारतीय शास्त्रीय संगीत
3. जाति गायन – प्राचीन काल में प्रचलित एक गेय विधा
4. श्रुति – 'श्रूयते इति श्रुति' ध्वनि को जिस लघुतम रूप में सुना जा सके और पहचाना जा सके
5. ग्राम – 'मेलः स्वरसमूहः स्यात्' स्वरों के समूह को श्रुतियों की विशिष्ट व्यवस्था से युक्त होने पर ग्राम कहा जाता है जैसे षड्ज ग्राम में 22 श्रुतियों पर 7 स्वरों की स्थापना इस प्रकार है सा–4, रे–3, ग–2, म–4, प–4, ध–3, नि–2
6. मूर्च्छना – विशिष्ट ग्राम में स्वरों का क्रमानुसार आरोहात्मक एवं अवरोहात्मक (सामान्यतया अवरोहात्मक) प्रयोग।
7. तान – 'तननात्ताना:' स्वरों को तानना या स्वरों के माध्यम से राग का विस्तार करना (आधुनिक समय में तान का अर्थ राग के अन्त में अथवा कदाचित बीच में भी स्वरों का तीव्रता से प्रयोग किया जाना माना जाता है।
8. रागालाप – राग का प्रारम्भिक परिचयात्मक आलाप
9. आक्षिप्तिका – प्राचीन काल में स्वर एवं पद संरचना के लिए प्रयुक्त संज्ञा
10. पूर्वप्रसिद्ध – ग्रन्थ रचना से पूर्व के समय में प्रचलित राग व ताल आदि
11. अधुनाप्रसिद्ध – ग्रन्थ रचना के समय में प्रचलित राग व ताल आदि
12. मार्ग संगीत – वह जिसे ब्रह्म द्वारा खोजा गया और भरत आदि द्वारा प्रयोग किया गया।
13. देशी संगीत – वह जिसका प्रयोग विभिन्न देशों में जन रुचि के अनुसार हो।
14. ग्राम राग
15. उप राग
16. राग – मार्ग राग प्रकार
17. भाषा
18. विभाषा
19. अंतर्भाषा

टिप्पणी

20. भाषांग
21. उपांग – देशी राग प्रकार
22. क्रियांग
23. रागांग

24. शुद्धा
25. भिन्ना
26. गौड़ी – गीति प्रकार
27. वेसरा
28. साधारणी

29. वाग्गेयकार – वह जो रचना के साहित्यिक पक्ष के साथ-साथ सांगीतिक रूप का भी रचयिता हो।
30. गंधर्व – वह जिसे मार्ग एवं देशी संगीत का ज्ञान हो।
31. स्वरादि – वह जिसे केवल मार्ग संगीत का ज्ञान हो।
32. प्रबन्ध – प्राचीन काल में प्रचलित गेय विधा

33. उद्ग्राह
34. मेलापक
35. ध्रुव – प्रबन्ध के धातु
36. आभोग

37. स्वर
38. बिरुद
39. तेनक
40. पद – प्रबन्ध के अंग
41. पाट
42. ताल

टिप्पणी

43. सूड
44. आलि अथवा आलिक्रम
45. विप्रकीर्ण

– प्रबन्ध प्रकार

46. तत
47. अवनद्ध
48. धन
49. सुषिर

– वाद्य प्रकार

50. नाट्य
51. नृत्य
52. नृत्त

– नर्तन की संज्ञाएं